प्रातः क्लास 18-9-68 ओमशान्ति पितश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। याद की यात्रा का कदम बढ़ाते रहो। बच्चे जानते हैं पुरुषोत्तम संगम युग की आयु बहुत थोड़ी है। 40वर्ष से अभी बाकी 8वर्ष रही है। आयु घटती जा रही है। हमको पहुंचना है बहुत दूर। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। 32वर्ष तो चला गया। यह पुरुषोत्तम संगम युग सब से हीरे जैसा है। मोस्ट वेल्युएबुल है। यह भूल न जाना है। बाकी समय है थोड़ा घर पहुंचने में। सतोप्रधान बन घर जाना है। और कोई सजा आदि न खावें। पास विथ ऑनर हो जाना है। बाप कोई जास्ती मेहनत नहीं देते हैं, न कोई खर्चा है। न कोई मंदिर-मस्जिद वा धर्मशाला आदि बनानी है। यह भी समझते हो शिव बाबा तो है ही निराकार। उनको शरीर है नहीं। जो कुछ शिव बाबाके नाम पर देते हैं शिव बाबा गिफ्ट साकार बच्चों के ही काम में लगाते हैं। वह कोई अपने शान्तिधाम में महल-माड़ियां तो नहीं बनावेंगे। और तो सभी हैं देह-धारी मनुष्य पैसे इकट्ठे करने वाले। यह कहां इकट्ठा करेंगे। अभी देहली में डायेक्शन देते रहते हैं सर्विस के लिये बड़े2 म्युज़ियम बनाओ। तो शिव बाबा के नाम पर बनाते रहते हैं। ऐसे नहीं कि शिव बाबा को हाथ में देते हैं। जैसे मनुष्य ईश्वर अर्थधर्मशाला वा हास्पीटल आदि बनाते हैं तो ईश्वर को कोई हाथ में थोड़ेही देते हैं। उनके नाम पर बनाते हैं। ईश्वर अर्थ दान-पुण्य करते हैं तो फिर दूसरे जन्म में अल्प काल क्षणभंगुर सुख मिलता है। क्योंकि यह दुनिया ही अल्प काल क्षण-भंगुर सुख की है। तो सुख भी अल्प काल का मिलेगा ना। यहां तो शिव बाबा डायेक्ट है। बाप ने तुमको अपना परिचय भी दिया है जिसकी कोई को भी पता नहीं। नई बात है ना। अभी याद की यात्रा तो कल्प पहले भी बाप ने समझाई थी। यह पुरुषोत्तम संगम युग तो जरूर होना चाहिए। यह शास्त्रों में तो लिखा नहीं है। पुरुषोत्तम संगम युग पर ही कनिष्ट पुरुष पुरुषोत्तम बनते हैं। यह लिखा न है। और जो भी धर्म स्थापक हैं सभी हैं शरीरधारी। बाकी यह धर्म स्थापन करने वाला है अशरीरी। इसलिये फिर इनके बदली कृष्ण का नाम डाल दिया है। अभी कृष्ण कैसे नई दुनिया की स्थापना करेंगे। जब कि खुद ही नई दुनिया का प्रिन्स है। तो नई दुनिया कैसे स्थापन हुई सो बाप बताते हैं मैं स्थापना करता हूं। यह कृष्ण का अन्तिम 84वां जन्म है। जिसमें यह अच्छे कर्म कर यह (ल0ना0) बनते हैं। बाप तुमको भी अच्छे कर्म सिखलाते हैं। यह है ही विकारी दुनिया। नई दुनिया है निर्विकारी दुनिया। यह पुरानी दुनिया है विकारी। बाप कहते हैं अब दिन बाकी थोड़े हैं। संगम युग काफितना समय बीत गया। अभी तो बच्चों को पुरुषार्थ करना बहुत है। बच्चे जानते हैं समय कैसे जाता रहता है। इतने वर्ष, इतने मास, इतने घंटा, इतने मिनट सेकण्ड बीत गये। बाकी है 8वर्ष। लाखों वर्ष का तो कोई हिसाब निकाल न सके। लाखों वर्ष कह देने से मनुष्य घोर-अंधियारे में पड़े हैं। बाप कहते हैं बच्चे यह पुरुषोत्तम संगम युग का समय बीतता जा रहा है। कलियुग तो गया। मनुष्यों की बुधि में हैकलियुग अजन 40 हजार वर्ष पड़े हैं। वह अपनी विकारी चाल ही चलते रहते। अभी तुमको विकारी से निर्विकारी, पतित से पावन जरूर बनना है। अभी इस पतित दुनिया का विनाश सामने खड़ा है। अभी सभी से बुधि का योग हटाते जाओ। इन सभी को छोड़ अपने घर जाना है। बाप को याद करना है और पवित्र भी बनना है। टाईम बहुत थोड़ा है इसलिए गफलत छोड़ो। गफलत करने वाले ईश्वरीय सर्विस कर नहीं सकते। जब खुद अच्छे बने और को अच्छा बनावे। बुरे तो जरूर बुरा ही बनावेंगे। कोई भी छी छी काम वा भूल आदि न होनी चाहिए। इसलिये कचहरी भी होती है। तुम अभी ऐसी दुनिया में जाते हो वहां कोई भूल आदि होती ही नहीं। क्योंकि रावण-राज्य ही नहीं। भूल कराती है रावण। याद में न रहते हैं तब माया भूल कराती है। कितनी भूलें मनुष्यों से होती रहता है। देवताओं के आगे भी जाकर कहते हम जन्म-जन्मान्तर के पापी हैं। अथाह पाप किये हैं। उनको यह पता नहीं रहता कि कितने जन्म लिये हैं। सिर्फ कहते हैं मैं जन्म-जन्मान्तर के पापिन हूं। जहां भी जावेंगे, गंगा पर जावेंगे तो भी कहेंगे हमारे पाप काटना।। जन्म-जन्मान्तर के पापिन हूं। देवताओं के मंदिर में जावेंगे, शिव के मंदिर में जावेंगे यह जरूर कहेंगे। तुमको तो बाप ने बताया कि कितने जन्म लिये हैं। कोई ने 63, कोई ने 60 कोई ने 20

कोई ने 10 जन्म, पाप तो जरूर किये हैं ना। रावण के राज्य में पाप जरूर होते हैं। जन्म ही पाप से होता है। सन्यासियों का भी भ्रष्टाचार से जन्म होता है। भ्रष्टाचारी, श्रेष्ठाचारी किसको कहा जाता है यह भी गवर्मेन्ट समझती नहीं। समझते हैं सन्यासी पवित्र हैं वही श्रेष्ठाचारी होंगे। बाप समझाते हैं उन्होंने तो घरबार छोड़ा है। स्त्री को विधवा और बच्चों को निधणका बनाकर जाते हैं। वह धर्म ही ऐसा है। यह भी न होते तो और ही गंदा बन जाते। फिर भी पवित्र तो रहते हैं ना। भारत है ही पवित्रता पर जमा हुआ। भारत जैसा पवित्र खण्ड और कोई होता ही नहीं। आधा कल्प है पवित्र दुनिया। उसमें भी सतयुग को पूरा पवित्र कहेंगे। त्रेता में दो कला कम हो जाती है। सतयुग को कहेंगे फूलों का बगीचा। सतयुग से फिर कैसे त्रेता, द्वापर, कलियुग में आये। कितने वर्ष, कितने मिनट पास हुये। बच्चों ने हिसाब तो निकाला है ना। बाकी संगम युग का हिसाब रहा है। हिसाब कहेंगे तो बाकी पूंछो है 40 वर्ष की। वह भी समय पास होता जा रहा है। बच्चों के पुरुषार्थ में भी कितना रात-दिन का फर्क रहता है। मर्तबे भी नम्बरवार होते हैं ना। तुम इस संगम युग के ब्राह्मण हो। तुम्हारे में भी नम्बरवार है। कोई कुछ भी सर्विस नहीं करते। कोई तो बहुत सर्विस कर रहे हैं। तन मन धन से सर्विस कर रहे हैं। आत्मा का मन भी लगा हुआ है, धन भी लगा देते हैं। बाबा से पूछते हैं बाबा कहेंगे जाये म्युजियम आदि बनाओ। मैं क्या करूंगा। मुझे कोई घर आदि थोड़ेही बनाना है। मैं तो चला जाऊंगा। इनको भी यहां घर नहीं बनाना है जिसमें ममत्व रखें। ममत्व तो फट से मिटा दिया। अभी बच्चों का काम है बाप को पालो करना। यहां तो कुछ भी रहना न है। इसलिए गरीब अपना जमा करते रहते हैं। शिव बाबा हम यह जमा करते हैं नई दुनिया के लिये। यह तो मृत्युलोक पापात्माओं की दुनिया है। जो कुछ करते हैं उनका सजा तो मिलता ही है। कल्प 2 जिसने जो किया है वह करते रहते रहते हैं। कितना वार किया होगा। देहली में भी म्युजियम बना रहे हैं। आपस में मिल-जुल कर सर्विस को बढ़ा रहे हैं। हिम्मते मरदा मददे शिव बाबा। तुम शिव बाबा पास भेज देते हो। शिव बाबा फिर तुमको देते हैं। हे हिम्मते बच्चे ... तुम हिम्मत करो। बाकी जो मदद चाहिए बाप से मंगा लो। कितनी सर्विस करते रहते हैं। पुरुषार्थ से समझा जाता है यह बेशक लायक हैं पास विथ आनर होने का। यह तो बिल्कुल नालायक है। मोचरा खाकर मानो टूकड़ ले लेंगे। पास विथ आनर सजा बिल्कुल नहीं खावेंगे। अपने को देखना है हमारे में कोई खामी तो नहीं। वगुलों साथ कोई लागत तो नहीं। नहीं तो उंच पद पात्र न सकेंगे। कोई तो बहुत जमा करते है, कोई तो कुछ भी नहीं। भल सतयुग में सुख तो सभी को होगा। गरीब भी बिमार आदि नहीं होंगे। परन्तु मर्तबे में फर्क तो होता है ना। दुःख की दुनिया में भी गरीब साहुकार का फर्क है तो सुख की दुनिया में भी गरीब साहुकार का फर्क होगा। अपने अन्दर देखो हमने सारा दिन बाबा की कितनी सर्विस की। बाप तो कहते हैं म्युजियम अथवा रूहानी युनिवर्सिटी का प्रबन्ध करना है। मकान आदि खरीद भी नहीं करना है शिव बाबा कहते हमको क्या पड़ा है जो मकान आदि लेवें फिर इतना मरकर देना पड़े। किराया पर लेते जाओ। फिर मकान उनकी मिलकीयत। पैसे काम में लग जाये। रह न जाये। ऐसा छोड़ ही क्यों जो माया हप कर ले। कितना युक्ति से काम चलता रहता है कल्प 2 मिसल। बच्चे कितना बिजी रहते हैं। ख्याल होता है जल्दी तैयार हो जाये बहुतों का कल्याण करें। बाबा भी दिन प्रति दिन पायन्दस सहजदेते रहते हैं। विकारी और निर्विकारी दुनिया भी देख रहे हो। अभी ऐसा (ल0ना0) बनना है। बाप तो ऐसा बनाने आये हैं। फिर जो जितना पुरुषार्थ करेंगे। देवीगुण धारण करनीहै। किसको दुःख न देना है। छी छी अक्षर मुख से न निकालना है। सतयुग में 5 विकार होते ही नहीं। अभी बाप स्वर्ग में ले जाते हैं तो किचड़ा सब छोड़ दो। नहीं तो बहुत सजा खानी पड़ेगी। आत्मा को किचड़ा साथ तो स्वर्ग में जाना न है। या तो योगबल से खलास करना है या तो फिर सजाओं से। बच्चों को समझानी मिलती रहती है। ड्रामा अनुसार हू बहू कल्प पहले मिसल तुम्हारी चलन चलती रहती है। किसको भी दुःख न देना है। इसमें मुख्य है आंखें। तिजरी की कथा भी है ना। वास्तव में है ज्ञान का तीसरा नेत्र। बाकी वह कथायें आदि तो सभी झूठे हैं, कोई जानते ही नहीं। अभी सच्चा बाबा तुमको—

सच्ची2 बातें सुनाते हैं। वह सत्य ना0 की कथा कितनी बारी सुनी होंगी। प्रेक्टीकल हो जाता है बाद में पास्ट की कथाएं बैठ सुनाते हैं। अभी सच्च2 बात तुम प्रेक्टीकल में सुन रहे हो। आधा कल्प तुम झूठी कथाएं सुनते आये हो। अब सच्च2 पर से ना0 बनने की युक्ति बाप बताते हैं। यह ल0ना0 ही जो सतोप्रधान थे वह फिर जन्म-मरण में आते2 तमोप्रधान बने हैं। फिर सतोप्रधान बनना है। शरीर तो हर जन्म में बदलती जाती है। कृष्ण सदैव कृष्ण ही थोड़ेही हो सकता है। नाम रूप देशकाल तो सभी बदलता है ना। 5000वर्ष से कितने वर्ष, दिन घंटे सेकण्ड बदलते गये। अभी पुरूषोत्तम संगम युग के भी दिन बीतते जा रहे हैं। इसलिये अपना सुधारा करते जाओ। यह तो बाबा जानते हैं जिन्हों ने कल्प पहले जितना सुधारा किया है उतना ही कर रहे हैं। सर्विस करते रहते हैं। तो सर्विस नहीं तो डिस सर्विस ही करते रहते हैं। फिर डिस सर्विस से तो ऊंच पद मिल न सके। सर्विस क्या करनी है: किसको सुखधाम का मालिक बनाना। बेहद का बाप बैठ पढ़ाते हैं। उनको अपना कोई लोभ नहीं है। जैसे सन्यासियों को होता है। महल बनावे यह करें। शिव बाबा का तो यह एक ही फ्लेट (रथ) मिल गया है। खुद कहते हैं मैं सबसे पुराना शरीर लेता हूं क्योंकि इनको ही फिर पहले नम्बर में जाना है। मैं इस ब्रह्मा तन में प्रवेश करता हूं। पहले नम्बर में भी यह था। फिर गिर कर यह बना है। फिर मैं ने ही इनका नाम ब्रह्मा रखा है। इनको मैं ने शुद्र से ब्राहमण बनाया। यही जो नम्बरवन में था वह अभी लास्ट में है। 84 जन्म लेते आये। फिर इनके वानप्रस्त अवस्था में आकर मैं प्रवेश करता हूं। यहां पावन शरिर तो कोई मिल न सके। आना भी भारत में ही है। कृष्ण ही गोरा और फिर सांवरा बनता है। ज्ञान चिता पर बैठ गोराबनते, काम चि0ता पर सांवरा बनते हैं। तो फिर इनको ही बैठ पहले नम्बर में जाना है। कितना सहज रीति समझाते हैं। समझने वाले झट समझ जाते हैं। आगे चल फिर जल्दी2 समझते जावेंगे। मौत सिर पर आवेगा। अभी तो अज्ञान नींद में है। फिर जागेंगे। तो बाप समझाते हैं मीठे2 बच्चों अपन को सुधारते रहो। सुधार की निशानी है सर्विस कर आप समान बनाना। अपनी उन्नति करनी चाहिए। कई बच्चे हैं जिनको उन्नति का तो ख्याल ही नहीं आता। बुधि बाप तरफ ठहरती ही नहीं। बेहद का बाप आकर बेहद की नालेज देते हैं। यह अनादि चक्र फिरता ही रहता है। 5000वर्ष के बदली फिर लाखों वर्ष कह देते हैं। बाप कहते हैं तुमने मेरा कितना अपकार किया। फिर भी मैं आकर सभी पर उपकार करता हूं। तुमने बहुत अपकार किया है। कल तो गाली देते थे कच्छमच्छ अवतार, कुते बिल्ले, पत्थर भित्तर सब मैंकह देते थे। अभीतो तुम ऐसे कह कर देखो। कहेंगे? नहीं। कितना रांग तुम समझते थे। यह है ही अनराईटियस दुनिया। वह राईटियस दुनिया है। यहां राईटस न बोलने वाले हैं। अभी बाप कहते हैं मैं तुमको सत्य बताता हूं* या भक्ति मार्ग में तुम ने सत्य सुना है ? बाप जो सुनाते हैं वह जरूर सत्य ही होगा। भक्ति मार्ग में तो रावणकी आसुरीबुधि बन जाते हैं। फिर ईश्वरीय बुधि से तुम कितने ऊंच बनते हो। आसुरी बुधि से तुम वाम मार्ग में चले गये। देवताओं के लिये हीदिखाया है वाममार्ग में गये। फिर उनको देवता नहीं कहा जाता। अभी यह है मनुष्यों की दुनिया। वह थी देवताओं की दुनिया। अर्थात दैवी गुण वाले। यहां है आसुरी गुण वाले। यह ईश्वर बाप बैठ पढ़ाते हैं। कृष्ण को ईश्वर थोड़ेही कहेंगे। यह भी भूल है। भक्ति मार्ग में मनुष्य कितने भूलें करते हैं। बाप कहते हैं पास्ट इज पास्ट यह तो फिर भी होगा। ऐसे नहीं तोबा भरनीहै। तोबा की तो बात ही नहीं। बाप ने समझाया है 63 जन्म तुम ने भक्ति की है। वहां तो जन्म ही थोड़े होते हैं। क्योंकि योगी हैं। अभी मैं तुमको इस रथ द्वारा पढ़ा रहा हूं। गायन भी है ब्रह्मा द्वारा स्थापना। किसकी? नई दुनिया, स्वर्ग की। तुमकोऐसा बनना है। बाकी थोड़ा टाईम है। नये2 को इतनी मेहनत नहीं करनी पड़ेंगी। तुमको जितनी करनी पड़ती है। क्योंकि दिन प्रति दिन पाइन्टस अच्छी निकलते रहते हैं। दो चार दिन में ही एकदम बुधि में बैठ जाता है। आंसू आ जाते हैं। इतना समय हमने ऐसे ही गंवाये दिया। अभी तो फिर बहुत पुरुषार्थ करना है। याद की यात्रा की ही मेहनत करनी है। मौत जब सामने आ जाता है तो फिर तुम बहुत तीखी मेहनत करने लग पड़ेंगे। जितना जोमेहनत करेंगे। अच्छा बच्चों को गुडमार्निंग और नमस्ते।